मणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरि अष्टम-शताब्दी स्मृतिग्रन्थ(फोल्डर नं. ०२०१९)

मुख्य टाइटल

प्रस्तावना

इस ग्रन्थ में

प्रथम खण्ड

विधिमार्ग प्रकाशक जिनेश्वरसूरि और उनकी विशिष्ट परम्परा – मुनि जिनविजयजी -------------- १

श्रीजिनचन्द्रसूरिजी की श्रेष्ठ रचना – संवेगरंगशाला आराधना – पं. लालचन्द्र भगवान गान्धी -- ९

नवाङ्गी वृतिकार श्रीअभयदेवसूरि – श्री अगरचंद नाहटा -------------------------------------- १७

प्रकाण्ड विद्वान और कवि स्रेष्ठ श्रीजिनवल्लभसूरि – श्री अगरचंद नाहटा ----------------------- २०

योगीन्द्र युगप्रधान दादा श्रीजिनदत्तसूरि – मुनिश्री सुखसागरजी महाराज ------------------------२१

मणिधारी दादा श्रीजिनचन्द्रसूरि - --- २४

षट्त्रिंशत् वाद-विजेता श्रीजिनपतिसूरि – महोपाध्याय विनयसागरजी -------------------------- २७

प्रगटप्रभावी दादा श्रीजिनकुशलसूरि – श्री भँवरलालजी नाहटा --------------------------------- २९

महान् शासन प्रभावक श्री जिनप्रभसूरि – श्री अगरचंद नाहटा -------------------------------- ३३

अनेक ज्ञानभण्डारों के संस्थापक श्रीजिनभद्रसूरि – मुनि श्री जिनविजयजी -------------------- ३८

अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि – श्री भँवरलाल नाहटा-------------------------- ४१

दादा गुरुओं के प्राचीन चित्र – श्री भँवरलाल नाहटा --- ४९

कीर्तिरत्नसूरि रचित नेमिनाथ महाकाव्य – प्रो. सत्यव्रतजी ------------------------------------ ५७

नरमणिमण्डितभालस्थल युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि चरितम् --------------------------------- ७५

दादाजी -- ८३

महोपाध्याय जयसागर – श्री अगरचंदजी नाहटा --- ८४

श्रीगुणरत्नगणि की तर्करङ्गिणी – श्री जितेन्द्र जेटली -- ८९

जोइसहीर-महत्वपूर्ण खरतरगच्छीय ज्योतिष ग्रन्थ – पं. भगवानदास जैन -------------------- ९५

महोपाध्याय समयसुन्दरजी के साहित्य में लोकिकतत्त्व – डॉ. मनोहर शर्मा ------------------- ९७

गहूंली संग्रह - -- १०४

महाकवि जिनहर्ष-मूल्यङ्कन और सन्देश – डॉ. ईश्वरदास शर्मा ------------------------------ १०५

पूज्य श्रीमद्देवचन्द्रजी के साहित्य में से सुधाबिन्दु – स्वामी श्री ऋषभदासजी ------------------११३

खरतरगच्छ की क्रान्तिकारी और अध्यात्मिक परम्परा – श्री भँवरलाल नाहटा ----------------- ११९

उ. क्षमाकल्याणजी और उनका साधुसमुदाय – श्री अगरचंदजी नाहटा ------------------------ १२६

सुविहिताग्रणी गणाधीश सुखसागरजी – श्री अगरचंदजी नाहटा -------------------------------- १२८

प्रभावक आचार्यदेवश्री जिनहरिसागर सूरीश्वर – मुनिश्री कान्तिसागरजी ----------------------- १३०

शासनप्रभावक आचार्य श्रीजिनआनन्दसागरसूरि – मुनिश्री महोदयसागरजी -------------------- १३५

आचार्य श्रीजिनकवीन्द्रसागरसूरि – साध्वीजी श्री सज्जनश्रीजी -------------------------------- १३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महान्प्रतापी श्रीमोहनलालजी महाराज – श्री भँवरलालजी नाहटा ------------------------------ १४२
आचार्य प्रवर श्रीजिनयशःसूरिजी – श्री भँवरलाल नाहटा ------------------------------------ १४३
प्रभावक आचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरि – श्री भँवरलाल नाहटा ----------------------------------- १४६
आचार्यरत्न श्रीजिनरत्नसूरि – श्री भँवरलाल नाहटा -- १४९
विद्वद्वर्य उपाध्याय श्रीलब्धिमुनिजी – श्री भँवरलाल नाहटा ---------------------------------- १५३
स्वर्गीय गणिवर्य श्रीबुद्धिमुनिजी – श्री अगरचंदजी नाहटा ----------------------------------- १५६
श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिजी और उनका साधुसमुदाय – श्री भँवरलाल नाहटा ---------------------- १५९
पुरातत्व एवं कलामर्मज्ञ प्रतिभामूत्ति कान्तिसागरजी को श्रद्धांजलि – श्री अगरचन्दजी नाहटा -- १६३
आचार्य श्रीजिनमणिसागरसूरि – श्री भँवरलाल नाहटा -- १६६
खरतरगच्छ के साहित्य सर्जक श्रावकगण - श्री अगरचन्दजी नाहटा ------------------------ १६९
अपभ्रंश काव्यत्रयी एक अनुशीलन – डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री --------------------------------- १७४
खरतरगच्छ की भारतीय संस्कृति को देन – रामवल्ल सोमानी ------------------------------ १८०
जेसलमेर के महत्वपूर्ण ज्ञानभण्डार – मुनि श्री पुण्यविजयजी ------------------------------- १८४
खरतरगच्छ की महान् विभूति दानवीर सेठ मोतीशाह – श्री चाँदमलजी सिपाणी -------------- १८६
द्वितीय खण्ड
खरतरगच्छ साहित्य सूची – श्री अगरचन्द नाहटा और श्री भँवरलाल नाहटा --------------- १-७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org